दादी की पुण्य तिथि पर उमड़ा जन सैलाब
विश्व बन्धुत्व लाने के संकल्प के साथ लोगों ने दिया श्रद्धांजलि

आबू रोड, २५ अगस्त, निसं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की चतुर्थ पुण्य तिथि पर ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन परिसर में समाधि स्थल प्रकाश स्तम्भ पर देश-विदेश से आये हजारों लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा। प्रातः काल से ही हजारों की संख्या में लोगों ने मौन की भाषा में संवाद करते पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के संकल्पों को पूरा करने तथा पूरे विश्व में विश्व बन्धुत्व स्थापित करने के संकल्प के साथ अपनी-अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रातः काल से ही हजारों की संख्या में लोग दादी की यादों में खोये रहे। ध्यान योग साधना के बाद संस्था की मुख्य प्रशासिका रायजोगिनी दादी जानकी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संस्था के महासचिव राजयोगी ब्र0 कु0 निर्वैर, अतिरिक्त महासचिव ब्र0 कु0 बृजमोहन, ब्र0 कु0 रमेश, संस्था के मीडिया प्रवक्ता ब्र0 कु0 करूणा, ग्राम विकास की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी, संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र. कु. मृत्युंजय, कार्यक्रम निदेशिका ब्र0 कु0 मुन्नी, शांतिवन प्रबन्धक ब्र0 कु0 भूपाल समेत देश-विदेश के वरिष्ठ पदाधिकारी समाधि स्थल प्रकाश स्तम्भ पहुंचे। कुछ मिनट मौन रहकर सभी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके पश्चात उनके संस्मरण में ध्यान योग का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि दादी प्रकाशमणि का जीवन एक चलता फिरता श्रेष्ठ कर्मों का म्यूजियम था। उनके हर कर्म से शिक्षा मिलती थी आज पूरे विश्व में उनके श्रेष्ठ कर्मों की मिशाल लाखों लोगों के रूप में उपस्थित है। हमें भी अपने जीवन पद्धति को ऐसे ही गुणों से सजा श्रेष्ठाचारी बनाना चाहिए। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि दादी ने सिद्ध कर दिखाया कि नारी शक्ति स्वरूपा बन सकती है। श्रेष्ठ कर्मों से ही दुर्गा और सरस्वती जैसा बना जा सकता है।

शांति की भाषा रहा आकर्षण का केन्द्र-हजारों की संख्या में लोगों की उपस्थिति होने के बावजूद भी लोगों ने मौन की भाषा से पूरे माहौल में शून्यता पैदा कर दी। इशारों से अपनी बात को रखते और चलते ऐसे लगे जैसे श्वेत वस्त्रों में फरिश्तों का समूह हो।

फूलों से नहा उठा प्रकाश स्तम्भ- पूर्व मुख्य प्रशासिका की समाधि स्थल को फूलों से ऐसे सजाया गया था जिससे लगा कि वह फूलों में नहा उठा हो। पंक्तिबद्ध होकर हजारों लोगों ने घंटो खड़े रहकर अपनी बारी का इंतजार कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

फोटो, २५एबीआरओपी, १, २, ३, ४, ५, ६, ७ प्रकाश स्तम्भ पर श्रद्धांजलि अर्पित करती संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी तथा समूह में उमड़ा जनसमूह।